शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'क्रांतिगंगा' प्रबंधकाव्य में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का व्यक्तित्व

आशा कनेल (शोधार्थी)
भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रख्यात रचनाकार श्रीकृष्ण 'सरल' का प्रबन्ध काव्य 'क्रान्ति गंगा' अपने नाम के अनुसार क्रान्ति गंगा की एक-एक बून्द को अपने में समेटे हुए है। भारत वर्ष का क्रान्ति का इतिहास बहुत लंबा रहा है। ब्रिटिश हुकूमत से आमने-सामने की लड़ाई लड़ने वाले क्रान्तिकारियों ने क्रान्ति की इस ज्वाला को पूरे दो सौ साल तक बुझने नहीं दिया। इस स्वातंत्र्य समर में अपने प्राणों की आहुति देने वालों में नन्हे अबोध बच्चों से लेकर बिहार के राजाकुँवर सिंह जैसे वृद्धों तक लाखों बलिदानियों की एक बृहद् मालिका है। इन क्रान्तिकारियों में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम अत्यन्त श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'क्रांति-गंगा' प्रबंधकाव्य में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस रचना का विश्लेषण किया गया है। उल्लेखित होता है।

'नेताजी सुभाष' काव्य का भाव सौन्दर्य

इस बृहद ग्रन्थ में भी लगभग एक सौ पैंतीस पृष्ठ नेताजी को ही समर्पित किए हैं। इस प्रबन्ध-काव्य को उन्होंने कई छोटे-छोटे सर्गो में बाँटा है। इस प्रबन्ध काव्य में सरलजी ने बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए अपने उपनाम के अनुरूप अत्यन्त सरल काव्य की रचना की है। कहीं भी भाषा की दृष्टि से कठिनाई अनुभव नहीं होती और न ही कहीं अर्थ प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

पात्रों के द्वारा बोले गये संवादों को जिस सहजता से काव्य रूप में उतारा गया है, वह काव्य का श्रेष्ठतम उदाहरण है। ऐसे ही संवाद युक्त एक प्रसंग को कवि ने पृष्ठों पर इस प्रकार उतारा है -

"क्या हुआ, कहो जल्दी, क्यों उलझन डाल रहे?
'सर! वो सुभाष बाबू थे जो, वो भाग गए,
घर वालों ने आकर यह रपट लिखाई है
ला-पता हुए वे, अपने घर को त्याग गए।"1

इन पंक्तियों में एक पुलिस अधिकारी की घबराहट स्पष्ट झलकती है। वह अपने मातहत कर्मचारी के द्वारा बात को इधर-उधर घुमाने से नाराज होकर तुरन्त सीधे-सीधे जवाब देने को कहता है। कर्मचारी का जवाब भी उस समय के मनोभावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम सिद्ध हुआ है। पूरे पद में कहीं भी अर्थ का लोप नहीं होता।

'रपट' जैसे शब्द कानूनी क्षेत्र में प्रचलित शब्दावली का प्रतीक है। भय के स्थायी भाव की व्युत्पत्ति करने में कवि सफल हुए हैं। हांलाकि इसके आस-पास के पदों में 'हल्लो', 'इंस्पेक्टर' जैसे अंग्रेजी शब्द तो उपयोग में आये ही हैं 'लापता', 'नजरबन्द', 'बागी' और 'नाकाबन्दी जैसे उर्दू शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

"हिटलर, सुभाष को चकित दृष्टि से देख रहा
उसके मन में हैं भाव प्रशंसा के जागे,
सम्पूर्ण आत्म-विश्वास, ओज-निधि लिए हुए
वह लौह-पुरूष भारत का है उसके आगे।"2

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपर्युक्त पद में जर्मनी के राष्ट्र नायक हिटलर और भारत की अपेक्षाओं के प्रखर सूर्य सुभाष बाबू के मिलन का दृश्य अंकित किया गया है। उक्त दृश्य में हिटलर अपनी तानाशाही छवि के बाद भी सुभाष बाबू के आभा मण्डल के समक्ष अपने-आप को बौना पाता है। इस सर्ग में भी भाषा सरल किन्तु गठी हुयी है। 'हाथ थापना', 'पुन्य कमाना','पत्ता नहीं हिलना' जैसे मुहावरों से युक्त भाषा वीर रस की लहलहाती खेती को औज गुण का खाद पानी देती हुई प्रतीत होती है।

"माँ! रोक न तू, सौगन्ध न दे मैं आता हूँ
मैं नहीं अकेला, मेरे साथ हजारों हैं,
क्या कहा, हाथ केवल ये दो क्या कर सकते
दो हाथ उठे, तो उठते हाथ हजारों हैं।"3

नेताजी का भाव लोक में खोजाना और कल्पना संसार में भारत माता से संवाद करना उनकी भाव प्रवणता को दर्शाता है। वे माँ भारती से कहते हैं कि मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ हजारों हाथ माँ की सेवा करने को तत्पर है। इस सर्ग में 'मैं लूं बदला, 'मैं लूँ बदला, मैं लूँ बदला जैसे पुनरुक्ति प्रयोगों से काव्य सौन्दर्य तो बढ़ा ही है। साथ ही अलंकार योजना ने कविता में चार चाँद लगा दिए हैं। तड़-तड़, जल-जल जैसे शब्द युग्मों में अपनी प्रभावोत्पादकता सिद्ध की है। वही 'टनन-टनन' एवं 'झन-झन' जैसे शब्दों ने ध्वनि मूलक सौन्दर्य की अभिवृद्धि की है।

"नेताजी पहुँचे कब्रगाह के अन्दर अब
है मौन उदासी उनके चेहरे पर छाई,
उनकी यादों में सन् सत्तावन चमक उठा
उन लाल दिनों की खूनी याद उभर आई।
लो हिले होठ, अल्फाज निकल बाहर आए
"अय शाह जफर! तुझको मेरा सौ बार नमन,
कह रहा हिन्द का एक सिपाही यह तुझसे
है जाग उठा भारत, तेरा मादरे-वतन।।"5

रंगून नगर पहुँचकर नेताजी का बहादुर शाह जफर की समाधि पर जाना उनकी राष्ट्रनिष्ठा और सर्वधर्म समभाव को प्रकट करता है। इन पदों में भी नेताजी की भावुकता अपने उदार रूप में प्रकट होती है। वहाँ जाते ही उनको 1857 के स्वातन्त्र्य समर की स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं 'उर्दू' शब्दों का कुशल उपयोग काव्य को रोचक बना देता है। 'अयशाह जफर', 'हिन्द' 'मादरे-वतन' और 'अल्फाज' जैसे उर्दू शब्द कविता को देशकाल परिस्थिति से जोड़ते हैं।

"आजाद-हिन्द सरकार बनेगी ही अपनी
मान्यता कई देशों से भी वह पाएगी
अपने झण्डे के नीचे ही अपनी सेना
स्वातंत्र्य-युद्ध लड़ने सीमा पर जाएगी।
"सरकार हमारी, हमने नहीं बनाई यदि
तो लोग कहेंगे, यह भाड़े की सेना है,
मैं सोच रहा हूँ, यह अवसर ही क्यों आए
यह अवसर हमको नहीं किसी को देना है।।"5

उक्त पद में नेताजी सुभाष के संघर्ष का वह काल लिया गया है जब सिंगापुर में वे स्वतन्त्र सरकार के गठन पर चिंतन कर रहे थे। नेताजी जानते थे कि जब तक सेना का संघर्ष चलता रहेगा परिणाम अनुकूल आयेंगे ही, किन्तु वैश्विक परिदृश्य में किसी संघर्षरत सेना को देश नहीं माना जायेगा। इसलिये स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में भारत को मान्यता मिले इसके लिए स्वतन्त्र सरकार का गठन भी करना होगा। नेताजी की इस चिन्तन धारा को कवि ने शब्दों का जामा पहनाकर एक अच्छे काव्य की रचना की है। इन पदों में भी हिन्दी अंग्रेजी और उर्दू के शब्दों को एक साथ गूँथकर एक अनूठा प्रयोग किया है। इसी समय नेताजी ने मंत्रिमंडल के गठन का उपयोग भी किया था। वीर रस से ओत-प्रोत इन पदों में 'झन्डे के नीचे आना' जैसे मुहावरों के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साथ-साथ लक्षणा शब्द शक्ति का उपयोग करते हुए काव्य सौष्ठव को रचनात्मक बनाने का प्रयास किया गया है।

"क्या पता, गोद सूनी हो जाए किस माँ की
है किसे ज्ञात, किसकी सिन्दूर उजड़ जाए,
किस बूढ़े की लाठी छिन जाए, किसे पता
क्या पता साथ किससे कब कौन बिछुड़ जाए।।
यह सोच-सोच नेताजी रोए जाते हैं
आँसू हैं, जो थमने का नाम नहीं लेते,
वे एक बिन्दु पर जमा रहे अपने विचार
उनके विचार जमने का नाम नहीं लेते।।"6

रंगून नगर से आजाद हिन्द फौज की विदाई होना है। नेताजी चूँकि इस सेना के सेना नायक हैं। एक अभिभावक के नाते अपने सैनिकों की चिन्ता उन्हें चैन नहीं लेने दे रही है। उनके मन में लगातार यह चिन्ता हो रही है कि युद्ध की विभीषिका पता नहीं इनमें से कितने जवानों को उनके परिवारों से छीन लेगी। इसी चिन्ता में नेताजी की आँखों से आँसू बह रहे हैं।

सामान्यतः नाट्य विधा में अंतर्द्वंद्व बहुत महत्व रखता है किन्तु काव्य विधा में इसे उकेरना थोड़ा कठिन काम है। सरलजी इस कार्य में अत्यन्त सफल रहे हैं। 'लाठी छीनना' जैसे मुहावरे और करुण रस की सृष्टि करते इन पदों का छन्दविधान भी बहुत कसावट लिये हुए है।

"आवाज झन्न की हुई चित्र के गिरते ही
जो जड़ा हुआ था काँच टूट कर बिखर गया,
मुस्करा रहा है चित्र पुत्र का धरती पर
माँ की गोदी से, धरती का ऋण उतरा गया।
तस्वीर उठा ली माँ ने अपने बेटे की
वह बार-बार बेटे के मुख को चूम रही,
अब उठा रही है वह सोने की चैखट भी
पलड़े पर रखने, उसी ओर है घूम रही।।"7

युद्ध और सेना के खर्च अपने आप में बहुत बड़े होते हैं। नेताजी के सहयोगियों ने इन समस्त व्यय का समायोजन करने के लिए नेताजी का तुलादान करने की योजना बनाई। इस योजना में समाज से नेताजी के वजन के बराबर स्वर्णदान लेने की योजना बनी। लोगों ने इस अवसर पर अपना सर्वस्व अर्पित करते हुए सुभाष बाबू के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। उसी अवसर पर देश की स्वतन्त्रता के यज्ञ में अपनी आहुति दे चुके एक पुत्र की माता अपने शहीद बेटे का स्वर्ण चौखट में जड़ा चित्र लेकर उपस्थित हुई और देखते ही देखते उस चित्र का काँच फोड़कर चित्र अपने पास रख लेती है और सोने की चौखट तराजू के पलड़े पर रख देती है। कविता का शब्द-शब्द करुण रस से ओत-प्रोत दिखाई देता है। चौखट का झन्न से गिरना और काँच का टूटकर बिखरना एक अलग ही ध्वनि सौन्दर्य उत्पन्न करता है।

"जो दृश्य दिखाई देता था, वह अद्भुत था
नौकाएं जलयानों तक दौड़ लगाती थीं,
वे लगा रही फेरे पर फेरे थीं अनेक
पीने का पानी और रसद ले जाती थीं।
जलपोतों पर होगई प्रचुर सामग्री अब
अब कई-कई हफ्तों तक की पर्याप्त हुई,
वे राष्ट्र-वीर उसको पा सभी निहाल हुए
उत्साह-भावना उन लोगों में व्याप्त हुई।।"8

अन्ततः भारत माता को स्वतन्त्र कराने के लिए आजाद हिन्द फ़ौज के साथ ब्रिटिश हुकूमत पर निर्णायक आक्रमण कर दिया। यह संवेदनशील समय था। इस समय रसद की भी आवश्यकता थी। नौसैनिक युद्ध वैसे भी बहुत कठिन होता है। ऐसे में नौकाओं से रसद की आपूर्ति कर रहे हैं और देखते ही देखते जलपोतों पर प्रचुर मात्रा में सामग्री पहुँच गई। देशभक्ति का जब्बा लिये उन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सैनिकों के पास अब कई सप्ताह के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो गई है। युद्ध के इस दृश्य को चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत करने में कवि ने सफलता प्राप्त की है। नौकाएँ, जलयान, जलपोत, राष्ट्रवीर और प्रचुर जैसे हिन्दी शब्द सौन्दर्य वृद्धि करते हैं वहीं रसद जैसे उर्दू शब्द उस समय की सैनिक शब्दावली को प्रकट करने के समर्थ हुए हैं।

"यदि राजनीति में नीति, राज्य पर हावी हो
वह मेल बढ़ाती है, वह हमें जोड़ती है,
यदि राजनीति में राज, नीति पर हावी हो
वह हमें अलग करती, वह हमें तोड़ती है।।"9

'सरलजी' कविता की रचना करते हुए कई बार बहुत दार्शनिक हो जाते हैं। इस पद में सरलजी का वही दार्शनिक रूप हमें देखने को मिलता है। मैदान में जीती हुई जंग के जब राजनेता टेबल पर हार जाते हैं तो कवि की लेखनी से अनायास ही क्रोध का लावा पिघल कर निकल पड़ता है। वे कहते हैं राजनीति में जब-जब नीति राज पर हावी होती है तो वह जोड़ने का काम करती है किन्तु जब-जब राज नीति पर हावी हो जाता है। वह हमें तोड़ने का काम करने लगता है। कवि ने उस मनः स्थिति को सबके समक्ष रखने का प्रयास किया है जिसके चलते राजनेता अपने निजी स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए बलिदानियों की शहादत के साथ धोखा करने से भी नहीं चूकते।

कला पक्ष

'सरलजी' के इस प्रबन्ध काव्य की भाषा पाठक के मन को छूती है। नित्य प्रति बोले जाने वाले बोलचाल के शब्दों का उपयोग उन्होंने बड़ी मात्रा में किया है। सरलजी का छन्द विधान बहुत ही कसा हुआ होता है। ओज गुण और वीर रस उनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके काव्य में लगभग सभी प्रकार के अलंकार उपयोग में लाये गए हैं। मुहावरेदार भाषा का उपयोग सरलजी की तीसरी बड़ी विशेषता है। वीर रस और ओज गुण का स्थायी प्रभाव होने के कारण पूरे प्रबन्ध काव्य में कठोर वर्णों का उपयोग बहुतायत में हुआ है।

संदर्भ सूची

1. *श्रीकृष्ण सरल-क्रान्ति-गंगा, संस्करण-1994, पृ. 784*
2. *वही, पृ. 787*
3. *वही, पृ. 797*
4. *वही, पृ. 810*
5. *वही, पृ. 811*
6. *वही, पृ. 828*
7. *वही, पृ. 853*
8. *वही, पृ. 912*
9. *वही, पृ. 913*